ब्रह्मा बाबा फरिश्ते स्वरुप में हैं आज भी मौजूद

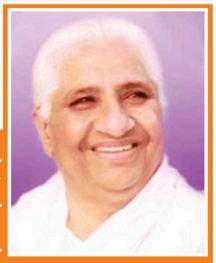

18 दिसम्बर 1984 को ईश्वरीय महावाक्य (मुरली) सुनाने के पश्चात ब्रह्माकुमारी संस्था की तत्कालीन मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि को संकल्प चला कि ठीक एक मास के बाद बाबा का स्मृति दिवस आयेगा। स्मृति दिवस की याद आते ही उनके मानस पटल पर ब्रह्मा बाबा के साथ की सुहावनी घड़ियों के सुंदर दृश्य उभर आये। उन्हें वह अलौकिक दृश्य याद आने लगे कि बाबा मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) सुनाने के पश्चात किस प्रकार हम ब्रह्मा-वत्सों को याद प्यार और नमस्ते करते थे। उस दौरान दादीजी के ब्रह्मा बाबा के साथ के अलौकिक अनुभव आपके लाभार्थ यहां प्रस्तुत हैं -

प्रश्न -दादीजी, क्या हमें कल्प-कल्प ऐसे ही ब्रह्मा बाबा से मिलने का सौभाग्य प्राप्त नहीं होगा? क्या हम इस अनुपम प्राप्ति से सदा ही वंचित रहेंगे?

दादीजी - नहीं, नहीं, ऐसी कोई बात नहीं। हमारे बाबा कोई आम व्यक्तियों जैसे नहीं हैं जो शरीर छोड़ने के बाद कभी मिल न सकें। बाबा का सदा ही बच्चों से यह वायदा रहा है कि साथ रहेंगे, साथ जियेंगे और साथ चलेंगे। और यह वायदा बाबा आज तक भी साकार माध्यम द्वारा अव्यक्त रूप में सभी बच्चों से मिलन मनाते, वाणी चलाते, मीठी टोली खिलाते और याद-प्यार-नमस्ते करते निभाते चले आ रहे हैं। जब तक हम सम्पन्न नहीं बनेंगे तब तक बाबा यह साथ निभाते ही रहेंगे। ब्रह्मा बाबा सूक्ष्म वतन में फरिश्ते स्वरूप में उपस्थित हैं और हम बच्चों पर अपना प्यार बरसा रहे हैं।

प्रश्न -दादीजी, बाबा छोटे बच्चों को नमस्ते क्यों करते थे?

दादीजी -शिव बाबा, ब्रह्मा बाबा द्वारा हमें सदा पाठ पढ़ाते थे कि मैं सभी का बाप होते भी निराकारी सो निरहंकारी हूँ। बाबा हमें सिर्फ नमस्ते ही नहीं करते लेकिन सदा कहते थे मैं तुम्हारा आज्ञाकारी सेवक हूँ। नम्रता को बच्चों के जीवन में धारण कराने के लिए पहले बाबा ने स्वयं उस गुण को प्रत्यक्ष दिखाया जिससे बच्चों को बाबा का अनुकरण करना सहज अनुभव हो। इस गुण के आधार पर बाबा ने बच्चों का जीवन सरलता से महान बनाया।

प्रश्न - दादीजी, आपने बाबा का प्यार पाने के लिए कौन-सी धारणाओं को अपनाया था?

दादीजी - भगवान के प्यार की प्राप्ति का आधार है -सम्पूर्ण पवित्रता। भगवान का प्यार पवित्र आत्माओं पर ही बरसता है। जितना हम पवित्र बनते जाते हैं तो आत्मा रूपी सुई स्वच्छ बनती है जिसके फलस्वरूप शक्तिशाली चुम्बक परमात्मा के तरफ बरबस खिंचती है और प्यार के सागर में समा जाती है। ऐसी आत्माएं ही दिलतख्तनशीन बनकर बाबा का सच्चा प्यार पाने का सौभाग्य प्राप्त करती हैं। बाबा कहते हैं जितनी पवित्रता, उतनी ही प्रालब्ध पाने की पात्रता होगी।

प्रश्न -बाबा कैसे याद, प्यार और नमस्त करते थे?

दादीजी - जब हम सभी ब्रह्मा-वत्स बाबा को प्यार से याद करते थे तो उसका उत्तर देने के लिए बाबा हमें याद करके मधुबन के छोटे हॉल में मुरली सुनाने आते थे। मुरलीधर बाबा मुरली (ईश्वरीय महावाक्य) सुनाकर प्यार की लहरों में हमें लहराते थे। मुरली समाप्त होने पर बाबा संदली से उठकर दायीं ओर के दरवाजे के पास खड़े होकर सभी को शक्तिशाली दृष्टि देते हुए ''मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग, रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्त'' कहते हुए हम बच्चों के आगे सिर झुकाते थे। फिर हम सभी मिलकर बाबा को नमस्ते करते थे।

प्रश्न - जब आप सम्मुख बाबा की मुरली सुनते थे तो आपको क्या अनुभव होता था?

दादीजी -कहा जाता है मुरली तो आत्मा को मस्ताना करती है। मुरली के गुह्य राज जब बुद्धि में मनन होने लगते तो रोमांच खड़े हो जाते हैं। इस ईश्वरीय जीवन में ज्ञान के गुह्य रत्न ही बुद्धि की सच्ची खुराक हैं, जीवन का अमूल्य खजाना हैं। जिस घड़ी बाबा की मुरली सम्मुख सुनते थे तो बापदादा का डबल फोर्स, एक तो बहुत बड़ी अथॉरिटी अनुभव होती थी और दूसरा साहस तथा शक्ति का अनुभव होता था। मुरली की मधुर तान कानों में गूंजते ही मनरूपी मोर नाचने लगता था। वह मुरली की अनोखी तान देह की एकदम सुधबुध भुलाकर विदेही बाप के साथ मधुर मिलन का अनुपम आनंद की अनुभूति कराती थी। और ऐसा लगता था कि बाबा हमें बहुत बड़ा ज्ञान रत्नों का खजाना दे रहे हैं जिसके आगे दुनिया के सभी खजाने फीके हैं।

प्रश्न - क्या बाबा ने 18 जनवरी, 1969 के दिन भी मुरली सुनाई थी?

दादीजी -मुझे अच्छी तरह याद है कि आदि से लेकर अंत तक बाबा ने बच्चों को मुरली सुनाना कभी भी मिस नहीं किया। अंतिम दिन भी ब्रह्मा बाबा का शरीर रूपी रथ अस्वस्थ होने पर भी रात्रि क्लास में शिव बाबा ने ब्रह्मा मुख द्वारा मुरली सुनाई। बाद में बाबा बच्चों को याद, प्यार और नमस्ते करके अपनी झोपड़ी में आराम शैया पर लेटने लगे। उस समय भी बाबा की अचल, अडोल अवस्था थी। अंतिम घड़ियों में बाबा ने मेरे हाथ में हाथ देते हुए शक्तिशाली दृष्टि से मुझे निहारा।

पहली बार अव्यक्त बाप दादा का संदेशी के तन में आना हुआ। तो बाबा ने संदेश दिया था -**'बच्चे, फिक्र न करो, बाबा तुम बच्चों के लिए वतन में तैयारी करने गया है। मेरा प्यारा बच्चा मेरे पास है। बाबा ने स्वयं को गुप्त कर शक्तियों को प्रत्यक्ष करने के लिए ये पार्ट बजाया है।**

बाबा ने हमें शिक्षाओं से सजाया

ब्रह्माकुमारी संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी ने अपने अनुभव में बताया कि जब मैंने पहली बार ब्रह्मा बाबा को देखा तो मुझे बाबा का शरीर गुम होकर वहां विष्णु का साक्षात्कार हुआ। मुझे लगा कि शायद मैं स्वप्न तो नहीं देख रही हूं, लेकिन वो स्वप्न नहीं था। वास्तव में बाबा साक्षात् विष्णु स्वरूप दिखाई देते थे। बाबा हम छोटे बच्चों को हर बात बड़े प्यार से सिखाते थे। गलती होने पर भी बाबा ने हमें कभी भी नहीं डाँटा और ही प्यार के सागर बाप ने हमें बड़े प्यार से राजकुमारी की तरह पालना दी। शिक्षाएँ भी बहुत प्यार से समझाते थे। जिन्हें हम सहर्ष स्वीकार करते थे। यज्ञ की हर प्रकार की सेवा बाबा स्वयं खुद करके हमें सिखाते थे। बाबा को देखकर हम भी चाहे कर्मणा, चाहे वाचा, छोटी-बड़ी सेवा बड़े प्यार से करते थे क्योंकि मेरा लक्ष्य था कि मुझे इस अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ में सम्पूर्णतया स्वाहा होना है।

कठिन तपस्या

हम आत्माओं को शक्तियों से तथा गुणों से सम्पन्न बनाने के लक्ष्य से खास वतन से शिवबाबा ने तपस्या अर्थात् भट्ठी का प्रोग्राम भेजा। हम दिन-रात योगाभ्यास करते थे। कभी-कभी 8-8 घंटे भी तपस्या करते थे जिसमें फरिश्ते पन की स्थिति का तथा शक्तिशाली स्थिति का अनुभव होता था। मैं वो ही शक्ति हूं जिसकी मन्दिरों में पूजा होती है, ऐसा स्वयं को शक्ति स्वरूप अनुभव होता था।

बाबा हमें भविष्य में होने वाली घटनाएं सुनाते थे कि कैसे विनाश होगा, कैसी भयानक परिस्थितियां पेपर के रूप में आपके सामने आयेंगी और कैसे उस समय तुम्हें अपनी शक्तिशाली अचल-अडोल स्थिति रखनी होगी। हम इस योग की भट्ठी में विशेष मौन भी रखते थे जिससे हमें योगाभ्यास में सुन्दर अनुभूतियां होती थीं। भट्ठी में स्वर्गिक जीवन के अनोखे दृश्य भी दिखाई देते थे जिससे बुद्धियोग पुरानी दुनिया से स्वत: ही हटता था। वही कठिन तपस्या जो बाबा ने 14 वर्ष के कालावधि में कराई, जीवन में मददगार बन गई। उससे योग हमें सरल अनुभव होता है।

बाबा ने हमें ज्ञान रत्नों का दान करना सिखाया

बाबा सदैव कहते थे, बच्चे, ये एक-एक ज्ञान रत्न अमूल्य हैं। जो इन्हें धारण करेगा वो कौड़ी से हीरे तुल्य बन जाएगा। जितना तुम महादानी बनकर अनेकों को ये खजाना बांटोगे उतना ही ये वृद्धि को पायेगा और अनेकों की दुआयें तुम्हें आगे बढ़ायेंगी।

बाबा ने किया मुझे योग्यताओं से सम्पन्न

मैं 1938 में कराची में रहता था और इन्टरमीडिएट का विद्यार्थी था। उस समय हैदराबाद में ओम मण्डली की चर्चा प्रतिदिन अखबारों में मुख्य रूप से होती थी। मैं सोचता था कि मैं एक बार देखूं...!

कुछ ही दिन बाद ओम मण्डली कराची में आ गई...अब मुझे तीव्र इच्छा हुई कि मैं जाकर देखूं...और एक दिन मुझे बाबा से मिलने का अवसर प्राप्त हो गया। जैसे ही मैंने बाबा को प्रथम बार देखा, उनकी दिव्यता व महान दैवतुल्य आकर्षक व्यक्तित्व को देखकर ही मैंने अपने जीवन का अन्तिम निर्णय ले लिया था। मुझे ज्ञान दिया गया जिसमें मुझे प्रथम दिन से ही सम्पूर्ण निश्चय हो गया और इस प्रकार मुझमें त्याग वृत्ति आ गई, मेरा सिनेमा देखना छूट गया, सम्बन्धियों के पास आना-जाना छूट गया। अब मेरा मन संसार से उठ चुका था, बस लगभग एक वर्ष बाद ही मैंने भी स्वयं को इस रुद्र यज्ञ में स्वाहा कर दिया।

कुछ ही समय में मुझे सेवायें दी जाने लगीं। मैं बहुत शान्त रहता था, कभी भी टाइम वेस्ट नहीं करता था। मेरी इन धारणाओं को बाबा भी महसूस करते थे। इसके बाद जो भी कोई नई सेवा होती थी तो बाबा मुझे बुलाते थे और पूछते थे– ''बच्चू, तुम्हें और ड्यूटि दें?'' और मेरा सदा ही एक ही उत्तर था–''हाँ बाबा।''

दादा विश्वरतन

बाबा सदा ही कहते थे कि यह बच्चा बाबा का वफादार व आज्ञाकारी बच्चा है। मैं यह ध्यान रखता था कि प्रत्येक कार्य पूर्ण रूप से ठीक हो...सर्वप्रथम मुझे श्रीमत को हूबहू पालन करने का संकल्प रहता था, जैसे भी बाबा कहे, जो भी बाबा कहे और जिस समय भी बाबा कहे।

मुझे प्रारम्भ से ही यह संकल्प रहा कि मुझे ब्रह्मा बाबा समान सम्पन्न बनना है–अत: मेरा प्रत्येक कर्म भी सम्पन्न हो व प्रत्येक संकल्प मुझे सम्पन्नता की ओर आगे बढ़ाये...

बाबा ने मुझे ऑलराउन्डर बनाया, आरम्भ से ही सब कार्य कराये। मुझे उमंग रहता था कि बाबा के मुख से जो भी निकले मुझे पूरा करना है। बाबा ने मेरे द्वारा बढ़ई का काम, बिजली का काम भी कराया फिर बाबा ने मुझे बनाया डॉक्टर, मैंने किचन में भी सेवायें कीं तथा बाबा ने मुझे एकाउण्टेन्ट भी बनाया।